Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 3 ~ Issue 1 (2015)pp: 65-83
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का महत्व और पंचायती राज्य के उद्देश्य

डॉ० अशोक कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनितिक विज्ञान राजकीय महाविद्यालय टप्पल अलीगढ़

पंचायत है | हमारे देश में प्राचीन ग्राम संस्थाएं हैं | जिन्हें ग्राम गणतंत्र की संज्ञा दी गई है | पंच परमेश्वर की कल्पना सदियों पुरानी है | समय करवट लेता रहा, इतिहास बदलता रहा, परंतु सम्वेदनाओं पर आधारित मानव जीवन के शाश्वत सिद्धांत अपनी कलेश्वर में मूलतः सार्वभौमिक है | पंचायती राज का अस्तित्व अभी इसी सार्वभौमिकता पर आधारित है | जिसमें लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण एवं प्रशासन पर बल दिया गया है | मानव समुदाय में इस स्वायत्तता की वाहक पंचायती राज संस्थाएं आगे बढ़ी हैं; जिनका आदर द्रविड़ हिंदू मुसलमानों और इसाई राजसत्ता ने अपनी आकांक्षाओं और अधिवक्ताओं के बलबूते पर किया है | हमारे समाज में अपनी बात सभी को बताना और सभी की बात सुनना व्यवस्था में रच-बस गया है | कि हम अंतकरण की आवाज पर विशेष बल देते हैं और इसी आधार पर पंचायती राज व्यवस्था को समर्थन प्राप्त है |लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, उस लोकतांत्रिक केंद्र वाद का विलोम है | जिसका प्रयोग रूस और चीन के समाजवादी राज्यों के शिखर पर आसीन केंद्रीय समितियों द्वारा नीति के निर्धारण में किया गया | सोवियत संघ और चीन में राजनीतिक सत्ता राज्य की चोटी पर के थोड़े से लोगों के हाथ में केंद्रित रही, जिसमें जनता की सहमति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता | इन नीतियों के पालन में जनता के शत-प्रतिशत सहयोग प्राप्त करने का अर्थ ही लोकतंत्र है |संसार इस प्रकार के लोकतंत्र को केवल अधिनायकवादी प्रवृति का पोषक का साधन मानता है |भारत में इसके विपरीत राज्य की सत्ता को इस प्रकार विकेंद्रीकरण करने की नीति अपनाई; जिससे राज्य के संचालक थोड़े से ही व्यक्ति ना होकर सारी जनता हो, और नीति का निर्धारण व उनका कार्यवन लोक सभा और ग्राम सभा दोनों के ही पूर्ण सामंजस्य पर आधारित हो| ऐसी शासन व्यवस्था का निर्धारण हो, जिसमें राज्य का प्रत्येक नागरिक का अनुभव कर सके कि राज्य के संचालन में उसका अपना हिस्सा है | पंडित नेहरू ने कहा था - " लोकतांत्रिक का वास्तविक अर्थ और उसका मूल्य उसके विकेंद्रित सत्ता में है | जिसमें जनता के किए जाने वाले सारे कार्यों का प्रबंधन केवल चोटी पर के कुछ लोगों द्वारा ना होकर, जनता द्वारा प्रत्येक स्थानीय इकाइयों के सहयोग से संपादित किए जाएं |"

संभवता पिछली शताब्दी के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि, पाश्चात्य लोकतंत्र की प्रणाली में राज्य की सत्ता वास्तव में जनता के हाथ में ना होकर, सत्तारूढ़ दल के मुट्ठी भर लोगों के हाथ में थी | इसलिए भारत में एक ऐसी व्यवस्था का प्रयोग किए जाने का निश्चय किया जिसमें लोकतंत्र का खाली ढिंढोरा हि ना पीटा गया; बल्कि जनता के सहयोग और शिक्षा के समावेश को प्रोत्साहन दिया गया | इसमें संदेह नहीं कि भारत का इस दिशा में अपना अनोखा प्रयास है | और यदि प्रयोग में उसे सफलता मिली तो संसार के लिए भारतीय बहुत महत्वपूर्ण दिन होगी| पश्चिमी देशों के बहुत से स्वतंत्र प्रेमी राजनीतिज्ञ इस देश के अनोखे प्रयास को बड़े ध्यान से देख रहे हैं; क्योंकि

सारे एशिया और अफ्रीका में जहां एक और अधिनायकवादी प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा, वहां इस अपार जनसमूह के देश में उसकी विपरीत दिशा में लोकतांत्रिक परंपराओं को कायम करने की चेष्टा की जा रही है | भारत के लिए यह प्रयोग बिल्कुल नया नहीं है | क्योंकि अपने अतीत की परंपराओं में पंचायत समितियों और जनपदों का इस देश में एक जाल समझा था; जिसके आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक प्रशासन पर उसे नियंत्रण का गौरव प्राप्त था | राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रामराज्य की कल्पना को साकार बनाने का भी यह एक प्रयास है |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण में विकेंद्रीकरण के साथ लोकतांत्रिक शब्द का प्रयोग से इस बात का भ्रम पैदा होता है | कि, जो सत्ता के विकेंद्रीकरण का अर्थ लोकतंत्र के आधारभूत तत्व का निरूपण कर देता है | तब लोकतांत्रिक शब्द को अलग से जोड़ने का क्या तात्पर्य हो सकता है |? डेमोक्रेटिक सेंट्रलाइज एशियन का प्रयोग श्री बलवंत राय मेहता समिति ने पंचायती राज के रूप में किया लेकिन समिति का प्रतिवेदन के प्रकाशित होते ही शब्दावली के प्रयोग पर आपत्तियां उठाई गई या अपेक्ष किया गया की पंचायती राज के सही अर्थ की अभिव्यक्ति में यह शब्दावली अपूर्ण अस्पष्ट और गोलमाल की भाषा है | श्री नेहरू ने परंपरागत भारतीय शब्दावली पंचायती राज का प्रयोग देश में किए जाने वाले नए प्रयोग का सही अर्थ स्पष्ट किया और तब से पंचायती राज का ही प्रयोग सर्वत्र किया जा रहा है |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का सिद्धांत

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना को लागू करने के निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जा सकती है |

1. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के अंतर्गत शासकीय उच्च स्तरीय शासन की शक्ति का स्थानांतरण किया जाता है | महत्व के विषय केंद्र सरकार के द्वारा अपने पास रखे जाते हैं, और प्रांतीय महत्व के विषय प्रांतीय सरकारों को सौंप दिए जाते हैं |इसके अतिरिक्त यह विषय जो अपनी प्रकृति से स्थानीय महत्व के हैं स्थानीय सरकारों को सौंप दिए जाते हैं, और इस बात का ध्यान रखा जाता है | कि स्थानीय सरकारों के द्वारा इन विषयों का प्रशासन बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के किया जाए | इस संपूर्ण प्रक्रिया के निर्धारण का आधार स्थानीय सरकारों के लिए न्यूनतम शक्ति नहीं; वरन अधिकतम शक्ति होता है | और जन समुदायों का वास्तविक आधार स्थानीय सरकारों को भी समझा जाता है |

2. शासन की शक्ति का विकेंद्रीकरण का विभाजन राजनीतिक प्रशासनिक एवं आर्थिक तीनों क्षेत्रों में किया जाता है | और इस प्रकार स्थानीय सरकारों को इन तीनों क्षेत्रों के अधिकार प्राप्त होते हैं|

3. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना के अंतर्गत स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं को युवा संगठन की दृष्टि से लोकतांत्रिक रूप प्रदान किया जाता है | स्थानीय स्वायत्त संस्थाएं जनप्रतिनिधियों के माध्यम से कार्य करती हैं, और यह जन प्रतिनिधि मनोनीत या अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित नहीं, वरन प्रत्यक्ष रुप से निर्वाचित होते हैं| बहुत निम्न स्तर की संस्थाओं; विशेषतया ग्राम पंचायतों, के अंतर्गत प्रबंधन कार्य में व्यस्त जनता के प्रत्यक्ष रुप से भाग लेने की पद्धति अपनाई जा सकती है |

4. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना के अंतर्गत स्थानीय संस्थाओं की स्थापना की जाती है |यह अपने क्षेत्र में पूर्व या अंतिम अधिकार नहीं होती है |राष्ट्रीय एकता और प्रभुसत्ता को बनाए रखने की दृष्टि से राष्ट्रीय सरकार को अधिकार प्राप्त होता है | कि वह इन संस्थाओं के घोर कुप्रबंधन या राष्ट्रीय संकट की स्थिति में इन संस्थाओं के कार्य में हस्तक्षेप कर सके; लेकिन हस्तक्षेप कर करना कम समय के लिए और अत्यंत विशेष परिस्थितियों में ही होना चाहिए | लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना का आदर्श निम्न संस्थाओं के कार्य में उच्च सत्ताओं का कम से कम हस्तक्षेप होता है | |

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना की सफलता क्रियान्वित के लिए कुछ विशेष सावधानियां बरती जानी आवश्यक है | जो इस प्रकार हैं-

1. एक बार यह देखा गया है | कि विकेंद्रीकरण की योजना के अनुसार स्थानीय संस्थाओं की स्थापना तो कर दी जाती है | लेकिन स्वयं इन संस्थाओं में शक्ति का केंद्रीयकरण हो जाता है | और कोई एक व्यक्ति अत्यधिक शक्तियों का प्रयोग करने लगता है |यह प्रवृत्ति लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण आदर्श के प्रतिकूल है| अतः इस से बचने का व्रत किया जाना चाहिए Dostana के वर्क इन संस्थाओं का गठन वर्णन कार्यप्रणाली में भी लोकतांत्रिक होनी चाहिए

2. उच्च स्तर की प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा निम्नस्तरीय संस्थाओं के क्षेत्र में कम से कम हस्तक्षेप ही किया जाना चाहिए यदि उच्च संस्था द्वारा अनुचित प्रजातांत्रिक हस्तक्षेप किया जाए तो इससे लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा

3. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना को अपनाते देश-विदेश की परंपरा और तत्कालीन परिस्थितियों को दृष्टि में रखा जाना चाहिए और परिस्थितियों की भिन्नता के अनुसार ही योजना में परिवर्तन कर लिया जाना चाहिए

4. इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना के अंतर्गत स्थापित स्थानीय संस्थाओं में संभावनाएं घर न करें

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के समर्थकों में कुछ नए लोकतांत्रिक शब्द के प्रयोग को सार्थक और उपयोगी बनाया है | श्रीमन नारायण ने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को जनता के सहयोग के माध्यम से एक माध्यम आना है | उनके अनुसार इसका उद्देश्य है | शासन में अधिक से अधिक लोगों को सजीव उपाय द्वारा शामिल करना लोकतांत्रिक शब्द के सही प्रयोग पर जोर देते हुए उन्होंने बताया कि शब्द के द्वारा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रशासनिक विकेंद्रीकरण से भिन्नता स्पष्ट करने में मदद मिलती है | लोकतांत्रिक का अर्थ जनता के सर्वांगीण सहयोग से है | अर्थात राज्य के हर स्तर राष्ट्रीय प्रांतीय सरकार स्थानीय सरकार के कार्यों में सहयोग| लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का तात्पर्य है | लोगों के अधिकार से जिसके द्वारा वे स्वयं अपने लिए योजना का प्रारंभ कर सकते हैं और स्वतंत्रतापूर्वक क्षेत्रीय उत्थान के लिए कार्यान्वित और परिचालित करते हैं |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को श्री इकबाल नारायण इन चित्रों में संकलित किया है |

1. लोगों द्वारा अपनी सरकार के कार्यों में सहयोग
2. इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उच्च स्तरों से सत्ता का नियम स्तरों तक विसर्जन
3. सत्ता के विसर्जन से नीचे के स्तरों में लोगों को नियुक्ति निर्धारण और योजनाओं के कार्यान्वयन से एक सीमा तक स्वतंत्रता तथा विधि के स्रोतों की उपलब्धि व उसके नियंत्रण तथा कार्यों के प्रशासन के लिए छूट
4. सत्ता किस प्रकार विकेंद्रित होने पर उसका जनता द्वारा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप से प्रबंध करने के अधिकार की उपलब्धि
5. विकेंद्रित सत्ता पर किसी एक व्यक्ति का सर्वाधिकार ना होकर समितियों द्वारा प्रतिनिधित्व के आधार पर प्रदत्तता और नियंत्रण
6. क्षेत्रीय इकाई स्तर पर किए जाने वाले कार्यों के ऊपर के हस्तक्षेप को सीमित करना
7. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की उपयुक्त विवेचना में विद्वानों ने अपनी बौद्धिक कुशलता का आवश्यकता से अधिक प्रयोग कर दिया है |

अधिक स्पष्ट शब्दों में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण से तात्पर्य है | ऐसी पंचायत और समितियों का गठन पर संचालन जो जनता के सहयोग से निर्मित हो व सामुदायिक विकास योजनाओं और सरकार के अन्य कार्यों में राज्य के साथ सहयोग कर सके अर्थात पंचायत राज्य का गठन और उसकी क्रियान्विति लोका तत्व विकेंद्रीकरण है | |

लोकतंत्र में सत्ता का विकेंद्रीकरण एक आवश्यक शर्त-

आचार्य विनोबा भावे के शब्दों में स्वयं स्वराज्य शब्द में सत्ता के विकेंद्रीकरण की धारणा निहित है | विकेंद्रीकरण के सिद्धांत का प्रत्येक संभव सीमा तक सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में प्रयोग किया जाना चाहिए

लोकतंत्र को जनता का जनता द्वारा और जनता के लिए शासन कहा जाता है | और लोकतंत्र का सर्वप्रथम सर्वप्रमुख तत्व है | यह है | कि शासन सत्ता का संचालन जनता के हित में होना चाहिए | व्यवहार में इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है | जब की सत्ता का अधिक से अधिक संभव सीमा तक विकेंद्रीकरण हो | ना केवल तर्क वर्ण व्यवहारिक जीवन का अनुभव भी यही बतलाता है | कि जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के शासन में यदि सत्ता का केंद्रीयकरण हो तो समस्त संता कुछ विशेष व्यक्तियों या वर्ग विशेष में निहित होकर रह जाती है | और इस स्थिति को सिद्धांत में भले ही लोकतंत्र कहा जाए वस्तुतः तो वर्ग तंत्र शासन ही होता है |गांधी जी का कहना था कि सत्ता का केंद्रीकरण सदा ही हानिकारक होता है | इसके परिणाम स्वरुप कुछ थोड़े से व्यक्ति राज्य की सत्ता पर एकाधिकार स्थापित कर लेते हैं और छल कपट द्वारा राज्य के साधनों का प्रयोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं जिसे रोकने का एकमात्र उपाय सत्ता का विकेंद्रीकरण ही हो सकता है | अतः लोकतंत्र को प्रस्तुत लोकतंत्र होना है | तो सत्ता के विकेंद्रीकरण की स्थिति को अपनाना आवश्यक है | लोकतांत्रिक ढांचे के अंतर्गत विकेंद्रीकरण की व्यवस्था ही लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण है |

लोकतंत्र के दो रूप है- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण और आर्थिक विकेंद्रीकरण**

राजनीतिक विकेंद्रीकरण का अर्थ है कि स्थानीय संस्थाओं में स्वायत्त शासन अधिक से अधिक हो यह स्थानीय संस्थाएं अपने क्षेत्र में स्वावलंबी हूं केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकार उनके क्षेत्र में कम से कम हस्तक्षेप करें उन्हें आदेश नहीं

आर्थिक विकेंद्रीकरण भी आवश्यक है केंद्रीकृत व्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों पर व्यक्ति विशेष हुआ राष्ट्र का अधिकार होता है | दशा में लोगों को उनकी अधीनता में रहकर कार्य करना होता है | आर्थिक विकेंद्रीकरण के अंतर्गत उत्पादन के साधनों का अधिकार होता है | जिस भूमि पर खेती करें उसी के अधिकार में रहे

गांधीजी प्रकार की शांति के केंद्रीकरण के विरोधी एवं राजनीतिक तथा आर्थिक दोनों ही प्रकार के विकेंद्रीकरण के प्रबल समर्थक थे गांधीजी के विकेंद्रीकृत समाज की रूपरेखा को चित्रित करते हुए किशोरीलाल मधुबाला लिखते हैं

सिद्धांत रूप में हमारे अभीष्ट राजनीतिक एवं आर्थिक समाज की रचना का चित्र यह है | कि उसकी न्यूज़ ग्राम पंचायत पर होगी यह ग्राम पंचायत प्रजातंत्र परस्पर मिलकर अपने छोटे छोटे संग बनाएगा यह प्रक्रिया उत्तर व्यापक होगी और कालांतर में सारी दुनिया एक संग होगा इन सत्ता और अधिकार उतने ही होंगे जितने की इकाइयां उन्हें देंगे इस तरह से कम से कम कार्य करेगा यह सब हो सकता है | जब हमने पूर्ण अराजकता की स्थिति से जिसमें केंद्र तथा दूसरी कोई सत्ता ना हो निर्माण करने का अवसर मिले लेकिन वस्तु स्थिति यह है | कि सबसे ऊपर एक सभा संपन्न केंद्रीय राज्य है | फिर उसके बाद उस से कम परंतु पर्याप्त सत्ता संपन्न प्रांतीय राज्य है | और उसके बाद छोटे छोटे संगठन है | जो केवल अपने ही कार्य करते हैं जितने की प्रांतीय राज्य ने उन्हें केंद्र राज्य की सहमति से दिए हैं

इसके लिए यदि हिंसा औरत इन उपायों को टालना छोटी इकाइयों का विकास कर उनके द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति का यही एक उपाय रह जाता है | की केंद्रीय और प्रांतीय नेताओं को समझा बुझाकर या दबाव डालकर इस बात पर राजी किया जाए कि यथासंभव अपने अधिकार छोड़ दें और छोटी से छोटी व्यवहारिक इकाइयों को सौंप दे|

आचार्य विनोबा भावे तथा जय श्री प्रकाश नारायण द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन भी विकेंद्रित सत्ता की धारणा पर ही आधारित है | और जनता को अपनी आर्थिक सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याएं स्वयं सफलतापूर्वक सुलझाने की शिक्षा देने का समर्थन करता है | श्री जयप्रकाश नारायण के अनुसार भारत में जनतंत्र का सूत्र आधार केबल SSC ग्राम काया ही हो सकती है | जिस में सफलता मतभेद कम होंगे और निर्दलीय प्रजातंत्र की धारणा को सफल बनाने की संभावनाएं अधिक है |

जनता के सक्रिय सहयोग तथा उसके द्वारा वास्तविक प्रशासन के सिद्धांत का प्रयोग जिलों तथा राज्य में भी किया जाना चाहिए इन इकाइयों को केंद्रीय शासन के अंग मात्र ना होकर स्वयं शासन के स्वायत्त क्षेत्र बनना चाहिए यदि ग्राम जिले तथा अंतर राज्य स्तरों पर यथार्थ स्वशासन व्यवहार में आने लगे तो यह अधिनायकवाद के विरुद्ध सबसे बड़ी सुरक्षा होगी | हमें इस बात की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए कि व्यवहार रूप में ग्राम शासन एक ऐसा समांतर शासन बन जाएगा जिसके तथा केंद्रीय शासन के बीच सामंजस्य का अभाव होगा श्री जयप्रकाश नारायण के अनुसार केंद्रीय बना रहेगा किंतु उसके द्वारा रेल गाड़ी में खतरे की जंजीर की तरह विशेष परिस्थितियों में ही कार्य किया जाएगा

वास्तव में राजतंत्र या अधिनायक तंत्र में सत्ता के विकेंद्रीकरण की आवश्यकता नहीं होती जितनी लोकतंत्र शासन प्रणाली में विकेंद्रीकरण के बिना लोकतंत्र का पन्ना अधिक कठिन है | जाति राजनीति शास्त्र जिसने भी किसी मत को रखा है | लोकतांत्रिक शासन व रूप है | जिसमें राज्य अधिकार किसी विशेष श्रेणी के लोगों को नहीं वरन समूचे समाज के लोगों को प्रदान किए जाते हैं

बलवंत राय मेहता के अनुसार लोकतंत्र की परिकल्पना यह है | कि केवल ऊपर से ही शासन चलाया जाए बल्कि स्थानीय प्रतिभाओं का विकास किया जाए तभी संभव है | जब की सक्रियता से सरकार के कार्यों में भाग ले सकें यही लोकतंत्र सत्ता का विकेंद्रीकरण है | इस स्थिति को हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जिस राज्य में सत्ता का जितना अधिक विस्तार होगा वह उतना ही अधिक लोग कल्याणी राज्य होगा जब सर्व साधारण के पास अधिकार आएंगे तो वे अपना कर्तव्य पालन भी निष्ठा के साथ सीखेंगे पर केंद्रित अवस्था में जनता अपने विकास और कल्याण कार्यों के लिए तत्पर रहेगी क्योंकि उसके पास सत्ता होगी अधिकार होंगे तथा उपयोग करने की शक्ति भी होगी

पंचायती राज विकेंद्रीकरण का दूसरा नाम

पंचायती राज्य की स्थापना भारतीय लोकतंत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धि है |लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और पंचायती राज्य दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची हैं प्रजातंत्र से तात्पर्य जनता के शासन से है | जिसमें वास्तविकता जनता के हाथों में होती है | विकेंद्रीकरण उसी प्रजातंत्र से संबंधित है | पंचायती राज्य भी उसे लोकतंत्र प्रजातंत्र का रूप है | जनता और सत्ता का आपसी संबंध है |

इसमें गांव से दिल्ली तक के प्रशासन का सभी स्तरों पर जनता का अधिकार है | कर्तव्यों का बराबर बंटवारा है |

वास्तव में पंचायती राज्य अथवा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण हमारी प्राचीन पंचायतों का बढ़ा हुआ रूप है | पर आधुनिक युग के अनुरूप इसमें नए उद्देश्यों नई शक्ति और नए तरीकों का समावेश कर दिया गया है | पंचायती

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

राज्य में विकास का कार्य सक्षमता की दृष्टि से तीनों स्तरों पर इस तरह बांट दिया गया है | कि ग्रामीण आर्थिक विकास दायित्व सरकार से हटाकर जनता की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संस्थाओं के हाथ में आ गया है | जो लोकसभा से ग्राम सभा तक मिश्र के पिरामिड का आकार बनाते हैं | भारत सरकार के एक-एक प्रकाशन में श्री जवाहरलाल श्रीवास्तव के पुरस्कृत निबंधों में इस पिरामिड आकार को पंचायती राज्य के लोकतांत्रिक स्वरूप को इस प्रकार दर्शाया गया है -

निबंध में पंचायती राज्य के लोकतांत्रिक स्वरूप का चित्रण करते हुए कहा गया है | कि पंचायती राज्य में त्रिस्तरीय तरीका इसलिए अपनाया गया है | कि गांव के मसले ग्राम पंचायत में चल जाएगी जो उसे समझने संभावना होगा उन्हें पंचायत समिति निपटेगी पंचायत समिति अपने कार्य क्षेत्र का कार्य करेगी जो उससे ना होगा उसे जिला परिषद के सामने रखेगी जिला परिषद जिले के काम के साथ पंचायती समिति कठिनाइयों को भी निपट आएगी

दूसरी तरफ जिला परिषद पंचायत समितियों को बराबर मिलती रहे पंचायत समिति अपनी सूचना पंचायत को दे देगी विधानसभा जो योजना और नीति बनाएगी जिला परिषद उन्हें अमल में लाएगी विधानसभा का लोकसभा से संबंध है | जो देश के लिए योजना बनाती है | इस प्रकार राज्य सरकार और संसद का संबंध जुड़ा है | पंचायती राज में ग्राम सभा से विधान सभा तथा लोकसभा तक विचारों का लेन देन चलता है | ग्राम सभा के कार्यों का असर लोकसभा तक पहुंचता है | इस तरह ज्ञान की गंगा ऊपर से नीचे कि और कर्म की सुगंधि नीचे से ऊपर की ओर पहुंचती है | क्योंकि लोग प्रतिनिधियों को इसमें स्थान दिया गया है |

यह राजनीतिक गठन प्रणाली का ही एक प्रकार है | इसमें जनता अपना काम करती है | उसे अधिक से अधिक भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है | लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण में सत्ता नीचे से ऊपर की ओर प्रदान की जाती है | इसमें जनता के प्रतिनिधि कार्य करते हैं उनके हाथ में शासन सत्ता होती है | लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रमुख विशेषताएं हैं-

1. जनता द्वारा उन प्रोग्राम तथा नीतियों के बारे में जो राज्य से संबंधित हैं स्वयं निर्णय लेना
2. अपने वित्तीय साधनों के ऊपर नियंत्रण रखना तथा उन्हें अच्छी प्रकार से चलाना
3. वास्तविक कार्यप्रणाली पर निगाह रखना आदेश लेना तथा नियंत्रण रखना यह उसका प्रशासकीय कार्य है | साथ ही साथिया देखना कि ऊपर वाले अधिकारी कम से कम हस्तक्षेप करें

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण में स्थानीय स्वशासन में विश्वास रखना तथा अधिक से अधिक सत्ता का स्वतंत्रता पूर्व प्रयोग करना सम्मिलित है | इसके अतिरिक्त स्थानीय शांति व्यवस्था न्याय व्यक्ति जनहित कार्य तथा उत्तर प्रशासन संबंधी सभी कार्य आ जाते हैं यह केंद्र तथा राज्य के कम से कम हस्तक्षेप पर पक्षपाती है | वास्तव में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण एक राजनैतिक आदर्श है | लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना को स्थानीय स्वशासन अथवा पंचायती राज द्वारा ही कार्यान्वित किया जाता है | इसके द्वारा स्थानीय शासन संस्थाओं को शक्ति प्राप्त होती है |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण अथवा पंचायती राज ने प्राचीन भारत में विशेष स्थान पाया है |जिसका वर्णन अगले अध्याय में करेंगे

पंचायती राज के पीछे पीछे जो विचारधारा नहीं थे वह यह है | कि गांव के लोग अपने शासन का उत्तरदायित्व स्वयं संभाल लेंगे यह एक महान आदर्श है | जिसे प्राप्त किया जाना है | क्या आवश्यक है | कि गांव में रहने वाले लोग कृषि सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा सिंचाई पशुपालन आदमी से संबंध विकास की आंखों में सक्रिय रुप से

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

भाग ले अभी तो उन्हें यहां भी अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी आवश्यकताओं और अनिवार्यताओं के विषय में स्वयं ही निर्णय कर सकें | पंचायती राज ग्रामीण लोगों को विकास कार्यों के संबंध में निर्णय करने की शक्ति प्रदान करता है | लोग अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से स्थानीय नीतियों का निर्धारण करते हैं और जनता के वास्ते आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसके अनुसार ही अपने कार्यक्रमों को लागू करते हैं इस प्रकार देश की जड़ों तक लोकतंत्र को प्रवेश कराया गया है | इसके अंतर्गत जनता के नीचे से नीचे स्तर पर स्थित लोग भी देश के प्रशासन से संबंधित हो जाते हैं कहा जाता है | कि जन संस्थाओं को निर्णय करने और कार्यक्रमों के क्रियांवयन की देखभाल का कार्य सौंपा गया है |

भारत की संस्कृति और परंपरा का प्रतीक

पंचायती राज भारत की संस्कृति और परंपरा काफी है | विश्व का कोई भी देश की आधुनिक हो गया हो वह अपनी ग्रामीण संस्कृति व सभ्यता की पहचान को नहीं मिटा सकता यह भी कहना उतना ही सत्य है | कि किसी भी देश की आत्मा गांवों में बसती है | नगर में नहीं नगर तो विभिन्न संस्कृतियों व सभ्यताओं के होते हैं किसी भी देश की संस्कृति गांव में ही जानती है | वही उसका मूल स्रोत है | गांव पहले बने नगर बाद में इसलिए आज हमारे देश की जो भी भाषा वेशभूषा परंपराएं प्रथाएं नीतियां लोक विश्वास धर्म और आदर्श हैं वह कहीं ना कहीं किसी न किसी रूप में गांव से जुड़े हैं पंचायती राज का विकास भी गांव से ही शुरु हुआ इसलिए गांव से परिचित हुए बगैर भारतीय संस्कृति को नहीं जाना जा सकता है |

भारत की संस्कृति और परंपरा ग्रामीण जीवन की एक विशेषता है | गांव की संस्कृति के अंत निकट संपर्क में होती है | ग्रामीणों में कथा कथानक उनके उनके गीत का उदय प्रकृति के अथाह सागर से होता है | ग्रामीण संस्कृति में कृत्रिमता नहीं होती है | वह अपनी स्वाभाविक जीवन को अपनी संस्कृति में उड़ेल देते हैं संसार की सबसे महान संस्कृतियों का उद्गम स्थान प्रकृति का स्वाभाविक रूप है | इस दृष्टि से गांव के प्राकृतिक वातावरण में संस्कृति जन्म लेती है | भारतवर्ष गांवों में बसा है | यहां परंपराओं का बंधन है | रूढ़ियों का राज्य है | और परिवर्तन होना कठिन है | गांव के हरे भरे खेत हमारे मन में एक अपूर्व शांत की भावना उत्पन्न करते हैं यहां के दिव्य वातावरण और सक्षम दवाई मंडल से आकर्षित होकर क्षणभर के लिए अपने को भूल जाते हैं परंतु विदेशी शासन में गांवों की दशाएं इन हो गई है | जमीदारी प्रथा और अनेक समस्याओं से त्रस्त ग्रामीण समाज नरक सा होने लगा है |

भारतीय परंपरा में पंचायतों का अस्तित्व एक प्राचीनतम अध्याय के रूप में पाया जाता है | वेदों में ग्रामीण ई वाल्मीकि में जनपद महाभारत में ग्राम संघ और जात को में ग्राम सभा का वर्णन मिलता है | यह संस्थाएं तक किसी विधान सभा द्वारा निर्मित विधियों के अनुसार संचालित नहीं की जाती थी बल्कि अपने आप का प्राकृतिक विकास देश में हुआ करता था इनमें से कुछ परंपरागत जन्मजात अधिकारों व नियमों पर और कुछ निर्वाचन की प्रणाली पर आधारित थी

ग्राम वासियों के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में पंचायतों का योगदान प्राप्त है | अपने क्षेत्र में पंचायतों द्वारा विभिन्न प्रकार के संगठनों का गठन किया जाता है | जैसे क्रीडा मंडल युवक दल महिला एवं बाल कल्याण मंडल नाटक मंडली के संगठन ग्राम वासियों के चौमुखी विकास में बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं

भारत की ग्रामीण जनता के विकास का माध्यम

पंचायती राज भारत की ग्रामीण जनता के विकास का माध्यम भी है | देश की ग्रामीण जनता के आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक विकास में पंचायती राज सहायक है | पंचायती राज्य संस्थाओं द्वारा ग्रामीण जनता को अपने अधिकारों का ज्ञान होता है | Up ग्रामीण जनता का नेतृत्व पनपता जा रहा है |\ गांव की अवहेलना करना अब आसान कार्य नहीं रह गया है | गांव के पिछड़े वर्ग में चेतना आई है | तथा गांव वालों में आत्मविश्वास की भावना भी जागृत होती है | उनमें स्थिति सुधारने के लिए भाग्य के भरोसे ना बैठ कर कुछ कर गुजरने की प्रवृत्ति पनपती जा रही है | पंचायती राज के द्वारा भारत की ग्रामीण जनता के विकास के निम्न आधार हैं-

1. सफाई एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्य- पंचायतों के द्वारा गांव में सफाई व स्वास्थ्य संबंधी कार्य किए जाते हैं जिसके द्वारा ग्रामीण लोगों में किसी प्रकार की बीमारी आदिना शरीफ| इसमें पीने के पानी की व्यवस्था, सार्वजनिक गलियों में नालियों तथा तालाब आदि की सफाई, सार्वजनिक स्वास्थ्य की ओर उन्नति तथा चिकित्सा प्रबंध, मुर्दों को जलाने और गाड़ने का प्रबंध, सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण, व्यक्तिगत शौचालयों का नियंत्रण, इमारतों के निर्माण पर नियंत्रण, चाय दूध आदि की दुकानों का लाइसेंस देना, प्रसूति गृह तथा शिशु कल्याण केंद्र की स्थापना अधिकारी सम्मिलित हैं

जब गांव में स्वास्थ्य व सफाई संबंधी सभी बातों की पंचायती राज संस्थाओं द्वारा सुविधा होगी तो गांव के लोगों को बीमारी का इलाज कराने में असुविधा नहीं होगी इससे इन का शारीरिक विकास होगा

2. सार्वजनिक निर्माण संबंधी कार्य: इसमें सार्वजनिक गलियों व फूलों आदि का निर्माण और उसकी मरम्मत सार्वजनिक इमारतों की व्यवस्था सार्वजनिक तालाबों और कुओं का निर्माण व्यवस्था उनकी स्वच्छता का प्रबंध धर्मशाला का निर्माण व व्यवस्था पशु भरो की स्थापना व नियंत्रण शराब की दुकानों और बूचड़खानों का नियंत्रण हर्षिता कपड़े धोने की घाटी का प्रबंध अकाल आदि के समय लोगों के काम में रोजगार आदि की व्यवस्था सार्वजनिक गलियों तथा बाजार मैं वृक्षारोपण और उनके लक्षण आदि कार्य सम्मिलित है |

3. शिक्षा एवं संस्कृति संबंधी कार्य: ग्रामीणों के विकास में सबसे महत्वपूर्ण माध्यमिक शिक्षा व संस्कृति है | इसके द्वारा ग्रामीण जनता को शैक्षिक व सांस्कृतिक जागृति आती है | इन कार्यों में शिक्षा का विस्तार कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहन मनोरंजन आदि के लिए अखाड़ों व क्लबों की व्यवस्था सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालय की व्यवस्था सामाजिक तथा नैतिक उत्थान के कार्य जैसे शराबबंदी छुआछूत की समाप्ति पिछड़ी जाति का कल्याण शामिल है |

4. प्रशासनिक कार्य: इसमें जनगणना करना बेकारी संबंधी आंकड़ों को तैयार करना जन्म-मरण विवाह आदि का लेखा सरकारी सहायता ग्रामीण क्षेत्र में पहुंचाना ग्राम विकास योजनाओं पर विचार मन में करना कृषि तथा गैर कृषि उत्पादन में वृद्धि की योजनाएं आधारित है |

5. जनहित संबंधी कार्य: इनमें प्रमुख भूमि सुधार संबंधी योजनाओं में सहायता करना प्राकृतिक प्रकोपों के ग्राम वासियों की मदद करना परिवार नियोजन का प्रचार करना विकास कार्यों के लिए सम्मान करना सहकारी समितियों की स्थापना को प्रोत्साहन देना

6. कृषि एवं रक्षा संबंधी कार्य: बेकार भूमिका कृषि योग्य बनाना कृषि उत्पादन तथा प्रयोग को प्रोत्साहन देना कृषि उत्पादन वृद्धि में सहायता देना उत्तम भेजो आदि के उत्पादन तथा प्रयोग को प्रोत्साहन देना ग्रामीण क्षेत्रों में जंगल आदि लगाना

7. अन्य कार्य: पाठशाला का निर्माण करवाना और उसकी मरम्मत करवाना डाक तार विभाग की ओर से गांव में डाक सेवकों की व्यवस्था करवाना अल्प बचत योजनाओं को प्रोत्साहन देना कुटीर व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन देना अपने क्षेत्र के निवासियों और फसलों की सुरक्षा तथा आग बुझाने का प्रबंध करना

उक्त कार्य जो पंचायत द्वारा ग्रामीण जनता के लिए किए जाते हैं इससे ग्रामीण जनता का पंचायतों के माध्यम से विकास होता है | ग्रामीण जनता में सक्रियता आती है | उन्हें पूर्ण सुविधाएं मिलती हैं जिससे कि उनका सामाजिक आर्थिक स्वास्थ्य संबंधी सांस्कृतिक विकास होता है | इन्हीं सब कारणों से पंचायती राज्य ग्रामीण जनता के विकास का माध्यम है |

ग्रामीण जनता में राजनीतिक जागृति का आधार

पंचायती राज व्यवस्था ने देश के राजनीतिकरण तथा आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है | पंचायती चुनाव और पंचायती राज संस्थाओं के कार्यकलापों में ग्राम जीवन में एक नया जागरण पैदा किया है | जब गांव वालों का इस तरह का शोषण नहीं किया जा सकता है | जिस प्रकार पहले महाजन और जमीदार वर्क करता था वोट की कीमत समझी जाने लगी है | ग्रामीण जनता की राजनीतिक हिस्सेदारी बड़ी है | लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण संस्थाएं स्वशासन की इकाइयों के रूप में विकसित हो रही हैं गांव की अवहेलना करना आसान काम नहीं रह गया है | गांव के पिछड़े वर्ग में चेतना आई है | गांव की स्त्रियों की राजनेतिक कार्यकलापों में भाग लेने लगी है | राजनीति जागृति के साथ-साथ सामाजिक चेतना भी बड़ी है | छुआछूत और भेदभाव की दीवारों को पंचायती राज ने जबरदस्त धक्का पहुंचाया है | मजदूर और नौकर कहा जाने वाला व्यक्ति जब पंचायत या पंचायत समिति की अध्यक्षता करता है | और बड़े राजनेताओं के साथ बैठता है | तो इस से गांव में सामाजिक व राजनीतिक चेतना का उदय होता है | गांव का जागरण राज्य स्तर की राजनीति पर दबाव डालने में सक्षम होता है | जातिगत धर्म तथा अन्य प्रकार के हित स्थानीय दबाव समूह के रूप में प्रकट होने लगते हैं दबाव समूह को राजनीति अब नगरों की बपौती नहीं रह गई है | ग्रामीण जनता को अपने अधिकारों एवं उत्तरदाई के विषय में नई जानकारी मिली है | गांव वालों में आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई है | उनमें स्थिति सुधार के लिए भाग्य के भरोसे ना बैठ कर कुछ कर गुजरने की प्रवृत्ति पनपती है |

भारत की ग्रामीण जनता में राजनीतिक जागृति का पंचायती राज आधार है | क्योंकि-

1. भारत में स्वस्थ प्रजातांत्रिक परंपराओं को स्थापित करने के लिए पंचायत व्यवस्था ठोस आधार प्रदान करती है | इसके माध्यम से शासन सत्ता जनता के हाथ में चली जाती है | या व्यवस्था ग्राम वासियों में प्रजातांत्रिक संगठनों के प्रति रुचि स्थापित करती है |
2. यह संस्थाएं भारत को भावी नेतृत्व तैयार करती हैं विधायक को तथा मंत्रियों को प्राथमिक एवं प्रशिक्षण प्रदान करती है | जिससे ग्रामीण भारत की समस्याओं से अवगत होते हैं इस प्रकार के उचित नेतृत्व का निर्माण करने एवं विकास कार्य की रुचि बढ़ाने में पंचायतों का प्रभावी योगदान रहता है |
3. पंचायती राज संस्थाएं केंद्रीय एवं राज्य सरकारों को स्थानीय समस्याओं के भार से हल्का करती हैं उनके द्वारा ही शासकीय शक्तियों एवं कार्यों का विकेंद्रीकरण की इस प्रक्रिया में शासकीय सत्ता गिनी-चुनी संस्थाओं में ना रहकर गांव की पंचायत के कार्यकर्ताओं के हाथ में पहुंच जाती हैं
4. पंचायत के कार्यकर्ता और पदाधिकारी स्थानीय समाज और राजनीति व्यवस्था के बीच की कड़ी हैं इन स्थानीय पदाधिकारियों के बिना ऊपर से प्रारंभ किए हुए राष्ट्र निर्माण के कार्यकलापों का चलन मुश्किल हो जाता है |

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

5. पंचायती प्रजातंत्र की प्रयोगशालाएं हैं यह नागरिकों को अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रयोग की शिक्षा देती हैं साथ ही उनमें नागरिक गुणों का विकास करने में मदद करती हैं

6. हमारी जनता इन संस्थाओं के माध्यम से शासन के बहुत करीब पहुंच जाती है | जनता और शासन में परस्पर एक दूसरे की कठिनाइयां समझने की भावना पैदा होती है | इससे दोनों में परस्पर सहयोग बढ़ता है | जो ग्रामीण उत्थान के लिए परम आवश्यक है |

7. पंचायत द्वारा ही यह संभव है | कि शासकीय अधिकारी शक्तियों तथा कार्यों का विकेंद्रीकरण किया जा सके शासन व्यवस्था उच्च अधिकारियों और उच्च स्तरीय गिनी-चुनी संस्थाओं में ही केंद्रित ना रहकर गांव की पंचायत के अधिकारी के हाथों में पहुंच जाती है |

8. विभिन्न विकास कार्यक्रमों में जनता का सहयोग पाने के लिए आवश्यक है | कि उन्हें देश की सही स्थिति का ज्ञान कराया जाए पंचायती संस्थाओं ने या काम बखूबी निभाया है |

पंचायती राज एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया है | कि ग्रामीणों के मस्तिष्क से अधिकारियों का भय जाता रहा है | अंग्रेजी शासन के युग में नौकरशाही की शक्ति से आतंकी थे गांव के बड़े-बड़े जमीदारों को छोड़कर बाकी सभी के लिए पटवारी जो की मालगुजारी एकत्रित करने वाले अधिकारियों में सबसे नीचे होता है | तथा जो एक गांव या कुछ गांवों की जमीन का हिसाब किताब भी रखता है | दुरुस्त कलेक्टर बल्कि गवर्नर से भी अधिक शक्तिशाली व्यक्ति था साधारण तथा उसी का कुछ करना पर्याप्त था और यही वातावरण उनके छोटे-छोटे दफ्तरों में भी था जिनका ग्रामीण जनता से सीधा संपर्क था

अब ग्रामीण खंड विकास अधिकारी के पास जाकर विश्वास के साथ उसे अपनी समस्याओं पर बातचीत कर सकते हैं भारतीय संदर्भ में पंचायती राज में या मूल्यवान लाभ प्राप्त हुआ है | क्योंकि यहां शताब्दियों से राजकीय शक्ति जनसाधारण के लिए भाई का विषय रही है | पंचायती राज में सहायता की भावना पैदा करने विकास कार्यक्रमों में जनता को भाग लेने का अवसर प्रदान करें तथा उनमें लोकतंत्र विचारों का प्रचार करने हेतु किया गया है | इसका श्रेष्ठतम लाभ जन साधारण में आत्मा महत्व की अनुभूति को उत्पन्न करना रहा है |

ग्रामों की आर्थिक उन्नति में सहायक-

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण अथवा पंचायती राज ग्रामों की उन्नति में भी सहायक होता है | देश के आर्थिक विकास के लिए भी पंचायतों का महत्व है | ग्रामीण भारत के आर्थिक विकास के इस प्रकार की स्थानीय संस्थाएं अति आवश्यक हैं गांव के निवासी अपनी आवश्यकताओं और उन को पूर्ण करने के तरीके से परिचित रहते हैं अतः विकास कार्यक्रम समय पर तथा कम खर्च में पूरे हो सकते हैं देश के आर्थिक सामाजिक विकास के लिए गांवों में जिस उच्च नेतृत्व की आवश्यकता होती है | वह पंचायतों द्वारा पूरी की जा सकती है |

पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से कामों में कुटीर उद्योग कृषि आदि की व्यवस्था की गई है | जब गांव में ग्रामीणों के लिए कृषि उद्योगों की समुचित व्यवस्था होगी तो ग्रामीण लोग खेती भी अच्छी तरह से कर सकते हैं और छोटे-छोटे उद्योग धंधों की सहायता से अपने जीवन का निर्वाह उचित तरीके से कर सकते हैं गांव में कृषि उत्पादन बढ़ाने की योजनाओं का निर्माण करना एवं उनका क्रियान्वन करना पशुपालन के द्वारा सहकारी समितियों का निर्माण करना पंचायती राज की संस्थाओं गांवों में विभिन्न प्रकार की आरती की योजनाएं बनाई जाती हैं जो ग्रामीणों के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होती हैं-

1. उत्पादन के लिए अच्छी योजनाओं को तैयार करना

2. छोटे-छोटे उद्योग धंधों की व्यवस्था करना
3. सेवा सहकारी समितियों की व्यवस्था करना
4. भूमि एवं जल साधनों की उपयुक्त व्यवस्था
5. नवीनतम शोध पर आधारित कृषि की सुधरी हुई नीतियों का प्रचार करना
6. लघु सिंचाई साधनों का निर्माण करना
7. सिंचाई के लिए कुआं बांधों का निर्माण मेरे बांधने में सहायता देना
8. भूमि को कृषि योग्य बनाना
9. कृषि भूमि पर भू-संरक्षण करना
10. उत्तम बीज वितरित करना
11. स्थानीय खाद्य संबंधी साधनों का विकास करना
12. सुधरे हुए कृषि औजारों के प्रयोग और निर्माण को प्रोत्साहन देना
13. पौधों की रक्षा करना
14. मछली पालन की व्यवस्था करना
15. हथकरघा बुनकरों की सहायता में दी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं की सहायता करना
16. शहतूत के फार्म या बगीचों की स्थापना करना
17. तसर का संग्रह तसर के कीड़ों को पालने की परियोजनाओं को लागू करना
18. हस्त शिल्पकारों को नारियल की जटा की सहायता से साफ सुथरे औजार देना
19. चारे की खेती को आर्थिक सहायता देने के साथ चारा विकास कार्यों का पुनर्गठन
20. इसके अतिरिक्त राज्य आयोजन में बताई गई नीति के अनुसार व्यापारिक फसलों का विकास करना तथा कृषि के विकास के लिए उधार और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराना आदि पशुपालन कराना गांव में कृत्रिम गर्भाधान केंद्र स्थापित कराना स्थानीय पशु की सुधारना पशु चिकित्सालय की स्थापना करना शालाओं की स्थापना और दूध भेजने का प्रबंध करना

पंचायती राज के द्वारा ग्रामीणों का सामाजिक आर्थिक विकास संभव होता है | क्योंकि इसके द्वारा जो योजनाएं ग्रामीणों के लिए बनाई जाती हैं उनका लाभ पंचायती राज की संस्थाएं ग्रामीणों तक पहुंचाती है | जिस से ग्रामीणों के विकास की दिशा परिवर्तित हो जाती है | और उन के उत्थान में सहायक सिद्ध होती हैं शिक्षकों को सरकारी करो को प्राप्त करने तथा उन्हें उन्हें वितरित करने तथा उनके भुगतान में और पुराने देने की ठोस प्रणाली की स्थापना में सहायता देना तथा परामर्श देना| आबादी के अनुसार तथा जनता के कमजोर वर्ग के लिए लोगों के लिए स्थलों की व्यवस्था करना आदि यह सब बातें ही ग्रामीणों के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक तथा उन्नति में सहायक होती है |

स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण कड़ी

- स्थानीय शासन की संस्थाएं प्रजातंत्र की सर्वश्रेष्ठ विद्यालय हैं तथा स्थानीय स्वशासन का चलन प्रजातंत्र की सफलता की सबसे बड़ी गारंटी है |- प्राइस
- स्थानीय संस्थाएं स्वराज्य को घर घर पहुंचाने का साधन है |- महात्मा गांधी
- भारतीय संविधान में स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था इसलिए की गई ताकि प्रत्येक व्यक्ति देश के शासन में भाग लेकर सच्चा नागरिक बन सके- डॉ आंबेडकर

स्थानीय स्वशासन का ही एक प्रमुख रूप लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण है | स्थानीय स्वशासन को लोकतंत्र की आधारशिला का नाम दिया जाता है | लोकतंत्र में जनता ही शासन करती है | और स्थानीय स्वशासन ही देश को लोकतंत्र की शिक्षा देने वाली तथा शासन करना सिखाने वाली सबसे महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं जिसमें जनता को स्थानीय संस्थाओं के माध्यम से प्रजातंत्र की व्यवहारिक शिक्षा नहीं दी जाती वहां प्रजातंत्र भीड़तंत्र में परिवर्तित हो जाता है | जिसे अराजकता का जन्म होता है | अतः लोकतंत्रीय व्यवस्था में स्थानीय संस्थाओं का भारी महत्व है | स्थानीय संस्थाओं के बिना लोकतंत्र व्यवस्था ऐसी होती है | जैसे बिना नीम का मकान कुमारी एमसीडी के शब्दों में स्थानीय स्वशासन की शिक्षा का प्रारंभिक पाठ्यक्रम है | और स्थानीय संस्था प्रजातंत्र की शिक्षा की प्रारंभिक प्रयोगशालाएं हैं

स्थानीय शासन या स्थानीय स्वशासन प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति और सामाजिक नियंत्रण तथा शक्ति एवं विकास के मध्य एक समझौता है | जिस रेडी में संघ शासन आनुपातिक प्रतिनिधित्व की युक्तियां आती है | इसी में इसको भी गिनती करते हैं 21 लोकतंत्रात्मक शासन में स्थानीय शासन की संस्थाओं का महत्व बहुत अधिक है | क्योंकि स्थानीय संस्थाएं लोकतंत्र के विद्यालय के रूप में कार्य करती हैं किसी भी देश में केंद्रीय और राज्य सरकारें विषयों का प्रशासन सुचारु रुप से नहीं चला सकती है | उनके पास ना तो इसके लिए समय होता और ना ही स्थानीय बातों की पूरी जानकारी होती है | यह सर्वथा उचित है | कि स्थानीय समस्याओं का समाधान प्रबंध और प्रशासन स्थानीय लोगों द्वारा ही किया जाए

स्थानीय स्वशासन प्रजातंत्र की नींव होती है | देश के नागरिक में राजनीतिक चेतना के प्रसार और लोकतंत्र के लिए वातावरण तैयार करने का महत्वपूर्ण कारण स्थानीय संस्थाओं द्वारा ही किया जाता है | स्थानीय शासन संस्थाओं में भाग लेकर लोग स्वायत्त शासन की कला सीखते हैं उन्हें नागरिकता का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है | या प्रशिक्षण राष्ट्रीय स्तर पर एक जनतंत्र के निर्माण की ओर ले जाने वाला होता है | स्थानीय शासन की अनुपस्थिति में नागरिक भावना जागृत नहीं हो सकती है | आज एक सर्वमान्य विचार है | कि नगर ग्राम जिला हो या प्रांत स्थानीय शासन जितना श्रेष्ठ होगा वहां के निवासी उसने सुखी और संपन्न होंगे इसलिए संसार के लगभग सभी देशो में संपूर्ण शासन का भार केवल केंद्र सरकार पर नहीं होता है | उसका एक बहुत बड़ा भाग संपूर्ण देश में स्थानीय शासन संस्था द्वारा संपादित होता है | यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शासन एक स्वतंत्र राष्ट्र की शक्ति का आधार है |

भाई होने के नाते संविधान में राज्य के विषय और राज्य और केंद्र शासित क्षेत्र में अपनी स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उनकी संरचना शक्तियों एवं कार्य के अभिकल्पना के लिए स्वतंत्र हैं पंचायती राज्य की स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण कड़ी है | क्योंकि-

1. लोकतंत्र की पाठशाला

स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र की पाठशाला है | इसके अधिकारिक लोगों को प्रशासनिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलता है | जब लोग विभिन्न प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हैं तो उन्हें पता ही विभिन्न कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है | फलस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर अपने अनुभव से देश और समाज को लाभ पहुंचा सकते हैं स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र की जड़ों को गहरा कर देता है |

2. स्थानीय समस्याओं की भिन्नता-

प्रत्येक नगरिया गांव की आवश्यकता है | यह समस्याएं होती है | अतः को भी सरकार एक ऐसी योजना बनाकर उन समस्याओं को हल नहीं कर सकती है | उदाहरण के लिए किसी भी स्थान पर पानी की आवश्यकता है | तो कहीं

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

स्वास्थ्य की अपने अपने स्थान की समस्याओं का समाधान सरकार के सहयोग से स्थानीय नागरिक ही भली प्रकार कर सकते हैं

3. स्थानीय लोगों द्वारा रुचि-

स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को पराया ऐसे कार्य सौंपा जाते हैं जिनका संबंध को संस्थान के निवासियों की दैनिक समस्याओं से होता है | अतः स्वाभाविक है | कि स्थानीय संस्थाओं की सेवाएं विशेष रुप से स्थानीय लोगों के हित साधक होती हैं यह संस्थाएं जितनी अधिक क्रियाशील होंगी स्थानीय जीवन उतना ही सुखी और समृद्ध बन सकेगा स्थानीय स्वशासन व्यवस्था में स्थानीय नेताओं को आगे बढ़कर काम करने का अवसर मिलता है | उन्हें राजनीतिक और प्रशासनिक अनुभव होते हैं स्थानीय जनता स्वतंत्रता और समानता का उपयोग करती है |

4. शासन कार्य में कुशलता-

स्थानीय स्वायत्त शासन से कार्य क्षमता बढ़ती है | हनी समस्याओं और आवश्यकताओं को स्थानीय जनता ही सबसे अच्छी तरह समझ सकती है | वही यह जान सकती है | कि उन स्थानीय समस्याओं को उचित रूप से किस प्रकार हल किया जा सकता है | स्थानीय शासन संस्थाओं में जनता की रुचि के कारण शासकीय कार्य दक्षता पूर्वक किया जा सकता है | विकेंद्रीकरण की अधिकांश लाभ हमें स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं द्वारा ही प्राप्त होता है |

5. विभिन्नताओं का पोशाक-

किसी भी देश के सभी स्थानों की समस्याएं एक जैसी नहीं होती है | देहाती और शहरी क्षेत्रों की अपनी पृथक समस्याएं होती हैं कुछ ऐसे भी क्षेत्र होते हैं जिनमें देहाती और शहरी दोनों ही विशेषताएं पाई जाती हैं और वह इन दोनों की ही कंधों से प्रभावित रहते हैं उन्हें हम अर्धशहरी और अर्थ देहाती क्षेत्र कर सकते हैं इन तीनों ही शहरों में आने वाले स्थान भी मात्रा और गुड़ की दृष्टि से परस्पर काफी अंतर रखते हैं इन मंत्रों का ध्यान रखे बिना सारे देश के बिना एक जैसी प्रशासनिक सेवाएं प्रदान करने से गंभीर को प्रणाम निकलने के खतरे रहते हैं स्थानीय शासन की व्यवस्था द्वारा इन खतरों को टाल दिया जाता है | स्थानीय संस्थाओं के माध्यम से विशेष स्थान की विशेष समस्याओं का समाधान करने की व्यवस्था कर दी जाती है |

6. सरकार का बोझ हल्का-

स्थानीय स्वशासन के अंतर्गत जब लोग नगरों व गांवों का शासन स्वयं करते हैं तो इससे राज्य सरकार व केंद्र सरकार का प्रशासनिक हल्का हो जाता है | जिससे वह अपनी शक्तियों को अन्य देशव्यापी तथा महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में लगा सकती हैं

7. मितव्ययिता-

स्थानीय स्वशासन से सरकारी देर में बड़ी बचत होती है | प्रथम जब पिछला व्रत कार्य केवल एक ही क्षेत्र विशेष के लिए किए जाते हैं तो उचित है | कि इन कार्यों का खर्च व क्षेत्र उठाए फलस्वरुप केंद्रीय सरकार इस गैस से बच जाती है | द्वितीय स्थानीय स्वशासन संस्थाएं अपना घर चलाने के लिए विभिन्न कर लगाती है | तथा स्थानीय करदाता या सहन नहीं कर सकता कि उनके धन का अपव्यय को स्थानीय शासन संस्थाएं खर्च में मितव्ययिता लाती हैं तृतीय स्थानीय संस्थाओं के सदस्यों को वेतन भी अधिकारिता नहीं दिया जाता है | और जो दिया जाता है | वह भी बहुत कम इस प्रकार सरकारी व्यय में बचत होती है | जिसका उपयोग अन्य आवश्यक कार्य में किया जा सकता है |

8. विकास योजनाओं की सफलता-

कार्यक्रम को सफल बनाने में उपयोग देता है | राष्ट्रीय और राज्य स्तर के सभी दोनों की मांग होती है | कि देशवासी उन्हें अपना सुरक्षित योगदान करें स्थानीय स्वायत्त शासन के फलस्वरुप देश के नागरिक अपनी अपनी सामर्थ्य के

अनुसार विकास कार्यों में शर्मसार हाथ कटा सकते हैं लेकिन यह तभी संभव है | जब स्थानीय शासन संस्थाएं अनावश्यक नियंत्रण से मुक्त हो और नागरिकों में राजनीतिक चेतना की दृष्टि से अधिक सक्षम हो

9. भ्रष्टाचार की कम संभावना-

विद्वानों का तर्क है | कि स्थानीय स्वशासन व्यवस्था में भ्रष्टाचार की संभावना कम रहती है | स्थानीय संस्थाओं के लोग भ्रष्टाचार आश्रम से प्राया कतराते हैं क्योंकि प्रथम तो उनमें कार्य छोटे स्तर के रहते हैं और दूसरे अधिकारीगण अधिकांश कार्य अपनत्व की भावना से करते हैं स्थानीय शासन का क्षेत्र सीमित होता है | अतः लोग नियंत्रण की निकटता के कारण भी अधिकारी भ्रष्टाचार से बचते हैं

10. नागरिक गुण का निर्माण-

स्थानीय स्वायत्त शासन नागरिक गुणों का निर्माण और प्रचार करता है | यह लोगों की अधिकारिक और कर्तव्यों में सामंजस्य की कला सिखाता है | स्थानीय स्वायत्त शासन के माध्यम से जनता या अनुभव करने लगती है | कि कर्तव्य की पूर्ति सही अधिकार जीवित रह सकते हैं स्थानीय स्वशासन जनता में जन भावना और उदार दृष्टिकोण का निर्माण करता है | जनता को यह महसूस होता है | कि व्यक्तिगत हिंदू की तुलना में सार्वजनिक हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

11. कार्य संपादन में शीघ्रता-

स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के कार्यों के संपादन में प्राया विलंब नहीं होता है | राज्य सरकार और केंद्र सरकार बहुत दूर स्थित होती है | अतः स्थानीय समस्याओं का समाधान शीघ्रतापूर्वक नहीं कर पाती हैं और सरकारों को अपनी अलग पद्धति होती है | जिसके कारण सारे प्रशासन में कठोरता आ जाती है | स्थानीय स्वशासन अथवा स्वायत्त शासन कठोर नहीं लचीला होता है | अन्य संस्थाओं द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति में अनावश्यक विलंब नहीं किया जाता है | यह शासन तकनीकी झंझटों की उलझनों में नहीं पड़ता है |

12. राजनीतिक जागरण

स्थानीय संस्थाओं का चुनाव में भाग लेने तथा मत देने के कारण लोग राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो जाते हैं ना केवल स्थानीय संस्थाओं के बल की प्रांतीय तथा केंद्रीय शासन के कार्यो पर भी निगाह रखते हैं और उन कार्यों में स्वयं भी भाग लेते हैं लास्की ने तो यहां तक कहा है | कि लोकतंत्र केवल उन्हीं व्यक्तियों को केंद्र या राज्य सरकार जनता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने का अधिकार होना चाहिए जो कम से कम 3 वर्ष तक स्थानीय स्वशासन के कार्य का अनुभव प्राप्त कर चुके हो

13. स्वतंत्रता की भावना

स्थानीय संस्था प्रजातंत्र का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण देती है | किसी भी देश में स्वतंत्र सरकार की स्थापना भले ही कर ली जाए परंतु संस्थाओं के अभाव में जनता में वास्तविक स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न नहीं हो सकती 12 शब्दों में जो महत्व विज्ञान की शिक्षा के लिए प्रयोगशालाओं का है | वही महत्व स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र की शिक्षा के लिए स्थानीय संस्थाओं अथवा नगर सभाओं का है | स्पष्ट है | कि स्थानीय स्वशासन तथा उसकी संस्थाएं लोकतंत्र की सफलता का मूल आधार है |

14. गांव का कायाकल्प-

हमारे देश में 80% आबादी गांव में रहती है | ग्राम पंचायत स्थानीय स्वशासन का मुख्य अंग है | तथा उनके द्वारा गांवों की समस्या सोचती हैं और ग्रामीण जीवन तथा विकसित होता है | महात्मा गांधी के शब्दों में गांव का कायाकल्प करने के लिए ग्राम पंचायतें रामबाण के समान है |

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

स्थानीय स्वशासन तथा स्वायत्त शासन की संस्थाएं वास्तव में लोकतंत्र का बीज बनाती हैं निरंकुशता पर रोक लगाती हैं स्थानीय स्वशासन के बिना लोकतंत्र की कल्पना ही व्यर्थ हो जाती है | सच्चा लोकतंत्र तभी हो सकता है | जब अधिक से अधिक जन सहयोग में जनता की भागीदारी शासन में रहे और यह तभी संभव है | जब स्थानीय संस्थाएं विशेषकर सबसे छोटी इकाई से हो लोकतांत्रिक पद्धति अपनाए पंचायती राज व्यवस्था का महत्व लोकतंत्र में सदैव रहा है |और भारत की विशेष परिस्थितियों के साथ ग्राम तथा ग्रामीण जनता का अभ्युदय तभी हो सकता है | जब ग्राम पंचायतें अधिक अधिक सजग अधिक शक्ति संपन्न और अधिक सक्रिय होंगी इसी उद्देश्य पंचायती व्यवस्था में निरंतर सुधार किए गए हैं एवं अन्य सुधार और भी अपेक्षित है |

स्थानीय स्वशासन के अंतर्गत भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई है | इसकी 3 इकाइयां है | ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत विकास खंड स्तर पर पंचायत समिति एवं जिला स्तर पर जिला परिषद सबसे निम्न धरातल पर ग्राम पंचायत है | और सबसे ऊपर जिला परिषद देहाती क्षेत्रों में स्थानीय संस्थाओं का ढांचा सीढ़ी नुमा है | जबकि शहरी क्षेत्रों में ऐसा नहीं है | पंचायती राज के माध्यम से सरकारी तंत्र को विभाजित करके और सत्ता को बांटकर देहाती भारत का पुनर्निर्माण करने का प्रयत्न किया गया है | ग्राम पंचायतें पंचायत समितियों तथा जिला परिषदों की इस पंचायत राज व्यवस्था को लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण कहा जाता है | दूसरे शब्दों में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और पंचायती राज समानार्थी शब्द हैं

पंचायती राज अथवा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण स्थानीय स्वशासन की ही संस्था है | इसलिए यह स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण कड़ी है | स्थानीय स्वशासन का अर्थ है | की जनता द्वारा स्वयं शासन करना होने अधिकार मिलना विलियम्स रामधन के अनुसार सामान्यता स्थानीय शासन में एक ऐसे प्रादेशिक प्रभुत्व ही समुदाय की धारणा नहीं होती है | जिसके पास अपने ग्रामीणों को नियमित करने का विधिक अधिकार एवं आवश्यक संगठन हुआ करता है | इसके लिए एक ऐसी सत्ता का होना आवश्यक है | जो वह नियंत्रण से मुक्त रहकर काम कर सके और यह भी जरूरी है | कि स्थानीय समुदाय का अपने मामलों का प्रशासन में साझा हो स्थानीय शासन का स्वागत शासन में यह तत्व किसी सीमा तक विद्यमान होते हैं इस विषय में न्यूनाधिक अंतर हो सकता है |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण पंचायती राज के उद्देश्य-

वस्तु पंचायती राज की स्थापना मूल्य उद्देश्य पूरे भारतवर्ष में सत्ता का विकेंद्रीकरण है | इससे ग्रामीण जनों को वास्तविक स्वराज्य का दर्शन होगा ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास का उत्तरदायित्व जनता की इन तीनों संस्थाओं द्वारा सौंप दिया जाए इन तीनों संस्थाओं का संबंध सजीव होगा लोकतंत्र की आधारशिला दृढ़ करेगी ब्रम्ह में चेतना बनेगी और लोगों में परस्पर मिलकर काम करने की आदत बढ़ेगी ग्रामीण जीवन की उदासीनता दूर होगी और नियोजित ढंग से योजनाएं बनकर उनका क्रियान्वयन कर जिला परिषद क्षेत्रीय समितियां और ग्राम पंचायत में ग्रामीण जनता का पथ प्रदर्शन करेंगे इन समस्याओं की स्थापना से लोगों के जीवन के दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा ग्रामीण जनता में आत्मविश्वास होगा और वह स्वावलंबन के आधार पर अपने अपने क्षेत्रों के विकास में जुड़ जायेंगे संस्थाओं के द्वारा जनता के सामने अपनी दशा में सुधार कर सकती है | जनसाधारण के लिए सुविधाएं उपलब्ध कर सकती है | पिछड़े वर्गों और दीन दुखी लोगों की सहायता कर उनका हित कर सकती है | इस व्यवस्था से बापू के जनकल्याण और रामराज्य का स्वप्न पूरा होगा

इन संस्थाओं द्वारा स्थानीय साधनों का अधिक से अधिक संख्या और उपयोग हो सकेगा योजनाओं को सफल बनाने के लिए संस्थाएं अधिक से अधिक जन सहयोग प्राप्त करने में सफल होंगी तन मन धन से देश के सभी निवासी

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

योजनाएं बनाने तथा उनको कार्यान्वित करने में जुटे रहें और परिश्रम और संगठन से अपने भाग्य का निर्माण करें या पंचायती राज का उद्देश्य है |

पंचायत राज के उद्देश्यों के बारे में विभिन्न विचारधाराओं के लोगों ने विभिन्न विचारों और शंकाओं को भी प्रस्तुत किया है | कुछ लोग इसे लोकतंत्र के आधारों का विस्तार मानते हैं कुछ ऐसे योजनाबद्ध विकास प्रदेश के सामाजिक क्रांति का एक यंत्र कहते हैं कोई इसे सामुदायिक योजनाओं की सफलता का साधन तो कोई स्वायत्त शासन की शक्तिशाली करने के लिए आवश्यक कदम मांग मानते हैं कुछ लोगों की राय में पंचायत राज वर्तमान सरकार द्वारा लोकतंत्र के नाम पर जनता की आंखों में धूल झोंकने का एक अच्छा षड्यंत्र है | जिसमें जनता को राज्य में हिसाब देने का करके वास्तविकता को कुछ लोगों ने अपने हाथ में बनाए रखने की चाल चली है | रमन उद्देश्यों का वर्णन किस प्रकार किया है |-

1. व्यक्ति और समाज के संबंधों को सही आधार पर खड़ा करने का उपक्रम जिसमें समाज की समस्याओं के हल में आत्म प्रबंध की प्रेरणा और देश की नागरिकता में ग्रामीण लोगों को राजनीतिक शिक्षा प्रदान करने की भावना है |
2. योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था में लोक कल्याणकारी राज्य के वृहद कार्यक्षेत्र में लोक प्रशासन के यंत्र को विस्तृत और सजीव करने का उपक्रम जिसमें स्वायत्त शासन की इकाइयों का निर्माण की योजना है |
3. एक बड़ी राजनीतिक जिसके द्वारा जनता का ध्यान प्रशासन की गंभीरता से दूर हटाना है | जिससे सर्वसाधारण को सत्ता के हस्तांतरण की बात केवल बात है | वास्तविक मित्रों के सोपान से लेकर राज्य की चोटी तक राजनीतिक सत्ता को एक विशेष राजनीति दल द्वारा अपने लिए संगठित करने का उपाय है |

पंचायती राज गांधी जी के रामराज्य का प्रतीक

गांधी जीने भारत में रामराज्य की जो कल्पना की थी उसका आधार गांवों की खुशहाली था गांधीजी के भारत में वास्तविक सत्ता कामों के साधारण लोगों के हाथ में होनी चाहिए थी उनकी अराजकतावादी विचारधारा के अनुसार राज्य की सारी सत्ता विकेंद्रित होकर गांवों की पंचायतों में स्थानांतरित हो जानी चाहिए थी गांधी जी की विचारधारा को भारतीय संविधान सभा ने स्वीकार किया था

वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना के लिए सत्ता स्थानांतरण-

कोई भी लोकतंत्र चोटी पर के लोगों की स्वतंत्रता के बल पर वास्तविक लोकतंत्र नहीं हो सकता जब तक कि गांव के लोगों को जो कि राज्य की आधारशिला है | लोकतंत्रीय तत्वों के उपभोग की सुविधा नहीं दी जाती पंचायती राज की स्थापना का उद्देश्य लोकतंत्र को हर व्यक्ति के दरवाजे तक ले जाने का उपक्रम है | अंग्रेज सत्ता देश के कतिपय नेताओं के हाथ में सौंपी गई परंतु उन्होंने क्या उस से जनता को सौंपा? इस प्रकार प्रश्न का उत्तर हमें तभी दिया जाएगा जब ग्राम सभा लोकसभा का अधिकतर काम अपने हाथ में ले लेगी और स्वतंत्र इकाइयों की तरह अपने क्षेत्र के कार्य व जिम्मेदारियों का निर्माण करेगी पंचायत राज जिला प्रशासन को लोकतांत्रिक शासन बनाने के लिए एक कदम है |

राजनीति का प्रशिक्षण

किसी भी लोकतंत्र की सफलता के लिए लोगों में राजनीतिक प्रशिक्षण नितांत आवश्यक है | बिना इस प्रशिक्षण के लोकतंत्र को केवल अधिकारों की प्रदाता समझ लेते हैं परंतु उसके प्रति अपने कर्तव्यों को नहीं समझ पाते मोलतोल स्थानीय स्वार्थ और गुमराह करने वाले के प्रति जनता को सचेत करने के लिए उसे छोटी-छोटी जिम्मेदारियों के लिए तैयार किया जा सकता है | पंचायती राज के द्वारा देश की राजनीति का नेतृत्व करने के लिए व्यक्तियों को प्राथमिक प्रशिक्षण लेना होगा साथी आगे आने वाले लोगों के लिए या अप्रत्यक्ष परंतु अच्छा साधन होगा

श्री जयप्रकाश नारायण स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है | कि पंचायती राज की सफलता के लिए यह आवश्यक है | कि लोगों को यह बताया जाए कि राजनीतिक क्षेत्र में पद्धति लोकतंत्र में उनके लिए आवश्यक क्रांति है | जिसमें उनके सहयोग बुनियादी आवश्यकता है | यही वास्तविक स्वराज्य है | जिसके लिए स्वतंत्रता की कठिन लड़ाई लड़ी गई थी

विश्व बंधुत्व के लिए आवश्यक सोपान-

पंचायती राज्य विश्व बंधुत्व की उपलब्धि की एक आवश्यक सीढ़ी है | इस विषय में श्री के एस डी ने कहा है | की कुटुंबी विश्व बंधुत्व का प्राकृतिक होगा पंचायत संगठन का उद्देश्य है | राज्य परिषद का निर्माण पूरा नहीं हो जाता तब तक पंचायती राज का असली उद्देश्य पूरा नहीं होगा

लोक कल्याणकारी राज्य का निर्माण

भारतीय संविधान में राज्य को एक लोक कल्याणकारी राज्य में परिवर्तित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है | पंचायतों को इस लोक कल्याणकारी राज्य की आधार स्वीकार किया जा चुका है | स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री नेहरू ने इस बात पर काफी जोर दिया था कि पंचायती संस्थाओं को अब लोगों की प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति का दायित्व अपने हाथ में ले लेना चाहिए और हर गांव में बीमारी बेरोजगारी और दूसरी समस्याओं के विरुद्ध अभियान के द्वारा लोगों में आत्मनिर्भरता स्वास्थ्य तथा संरक्षण के प्रति आत्मविश्वास की भावना जागृत करनी चाहिए जमीन का उचित बटवारा, गांव में जन स्वास्थ्य की जिम्मेदारी विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक धन की उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कार्यों का दायित्व पंचायतों को लेना होगा कोई भी राज्य लोक कल्याणकारी जब तक नहीं बन सकता जब तक उसकी बुनियादी इकाई राज्य के दायित्व को अपना दायित्व समझकर सहयोग नहीं करेगी

सामुदायिक विकास

आरंभ में पंचायती राज का मुख्य उद्देश्य था सामुदायिक विकास योजनाओं में जनता का सहयोग प्राप्त करना देश में यह योजनाएं 1992 से आरंभ की गई थी जिनका उद्देश्य था ग्राम समुदाय का पुनरुत्थान पर सरकार को यह जानकर निराशा हुई कि सर्वसाधारण इन योजनाओं को सरकार के द्वारा अपनी ओर से चालू की जाने वाली योजनाएं समझने लगा बिना जनता के सहयोग और उत्साह के उनके क्षेत्र में विकास का कोई भी लाभकारी कार्य सिद्ध नहीं किया जा सकता स्वर्गीय बलवंत राय मेहता समिति की नियुक्ति सामुदायिक योजनाओं में जनता के सहयोग की संभावनाओं का अध्ययन करने तथा योजनाओं को अधिक क्षमता और मितव्ययिता के साथ कार्यान्वित करने के और आधार ढूंढने के लिए ही की गई इस समिति के द्वारा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के विचार की खोज की गई

उपरोक्त स्पष्ट होता है | कि लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का उद्देश्य नागरिकों में गुणों का विकास करना है | जो शासन के लिए आवश्यक है | इसके अंतर्गत नागरिकों को राजनीतिक अर्थ संबंधी अधिकार प्राप्त होते हैं नीति-निर्धारण राजनीतिक कार्य के साधनों एवं उनके खर्च करने के ढंग पर नियंत्रण कार्यान्वित किए जाने वाले विकास कार्य की देखरेख उनका नियंत्रण संचालन संबंधी कार्य और शक्तियां ग्राम पंचायत पंचायत समिति एवं जिला परिषद को प्राप्त हुई है |

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का महत्व

लोकतंत्र की व्याख्या करते हुए जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन के रूप में परिभाषित किया जाता है | परंतु वास्तविकता यह है | कि वर्तमान समय में सत्ता प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा चल रही है | उसके कारण जनता की धारणा निरर्थक हो गई है | वर्तमान समय में राजनीतिक दलों के थोड़े से नेता हैं सभी महत्वपूर्ण निर्णय करते हैं और सामान्य जनता के सामने इन निर्णय को स्वीकार कर लेने के अलावा कोई मार्ग नहीं रहता है | सामान्य जनता एक निश्चित

समय के बाद अपने प्रतिनिधि या नेता का चुनाव अवश्य करती है | परंतु वास्तविक प्रशासनिक कार्य में अब जनता का कोई हाथ नहीं रह गया है | ऐसी स्थिति में जनता की धारणा का यथार्थ रूप प्रदान करने के लिए लोकतंत्र में सत्ता का विकेंद्रीकरण दूसरे शब्दों में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के आदर्श को अपनाना आवश्यक हो गया है | वास्तव में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्राण है | और लोकतंत्र की सफलता लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की सफलता पर ही निर्भर करती है |

यही है | कि एक व्यक्ति को भी सत्ता में भागीदारी का अवसर प्राप्त हो लेकिन और गांधी जैसी विश्व की अन्य मानवतावादी विभूतियों ने लोकतांत्रिक सिद्धांत के समर्थन में बहुत कुछ कहा है | जनता ही इस शासकीय सत्ता का स्रोत है | वहीं से लाभान्वित होती है | इसलिए उनकी प्रभुसत्ता तथा आधुनिक राजनीतिक प्रणालियों का अनिवार्य तत्व है | यही कारण है | कि हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान की रचना भारत के लोगों के आधार पर की|

संदर्भ सूची

1. At his speech delivered at the annual conference of State Ministers of munity Development and Panchayti Raj August, 1962
2. Vital Speechs,Sep.1962,P624
3. डा.के.एन.वर्मा,राजनीतिक निबन्ध (पना मकाण) पर ।
4. Mahashawari, B.Studies in Panchayati Raj.Page 27
5. डा.पुखराज जैन,राजनितिक विज्ञान के सिडन्त, पृष्ठ 171
6. Ouoted Albert Lepawsky in Adminishpage 326.
7. Poul Meyr,quoted in Indian Journal of Public Ad. Jan1963.p:14.
8. Dr.Iqbal Narain,Indian Journal of Public Ad. Jan.March,1963. page 15,16. ।
9. पुखराज जैन ,राजनीतिक विज्ञान के सिद्धान्त,पृष्ठ 170 से उद्धत।।
10. इ.एच. सी. शम्मी , भारत में स्थानीय प्रशासन पष्ठ 92
11. डा. हरिश्चन्द्र शर्मा भारत में लोकप्रशासन, पृष्ठ 400
12. प्रो.गगा प्रसाद भार्गव ,प्रा.या प्रसाद रस्तोगी राजनिति शास्त्र के सिद्धान्त पष्ठ 23
13. चन्द्र प्रकाश भाम्मरी लोक प्रशासन पृष्ठ 267
14. वीरेन्द्र नाथ सिह ग्रामीण समाज शास्त्र,पृष्ठ6,7
15. डॉ. हरिश्चन्द्र शर्मा , भारत में स्थानीय प्रशासन पृष्ठ 107
16. Report of the study team on Panchayati Raj (1964) popularly known as Ali Committee report.
17. डॉ.बी.एल.फड़िया, लोक प्रशासन पृष्ठ 759,760
18. पंचायती राज समिति रिपोर्ट ,अगस्त 1978,नई दिल्ली ।।
19. भारत में स्थानीय शासन (Local Government) को स्थानीय स्वशासन(Local Government) कहते है |।
20. James Bryci,Modern Democracies,page.133।
21. M.Finer; English Local Government :1950;p.4

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

22. हरिदत्त वेदालंकार, लोक प्रशासन ,पृष्ठ 263.
23. डॉ. हरिश्चन्द्र शर्मा ,भारत एवं विदेशों में स्थानीय सरकारे ,पृष्ठ 2
24. देवेन्द्र उपाध्याय, पंचायती राज व्यवस्था ,पृष्ठ 36
25. डॉ. हरिश्चन्द्र शर्मा ,भारत एवं विदेशों में स्थानीय सरकारें, पृष्ठ 54
26. Encyclopaedia of the Social Science;vol.IX-X; Page 574
27. Maheshawari,B-studies in Panchyat Raj P.12
28. उपरोक्त, पृष्ठ 27